मनोज
कॉमिक्स
संख्या 1012
8.00
फंदा
थ्रिल.एक्शन.एडवेंचर

प्रकाशक : मनोज पॉकेट बुक्स, 1584 दरीबा कलां, दिल्ली-110 006

वितरक : राजा सेल्स कारपोरेशन, 761 मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110 009

लेखक : अनसार अख्तर.

चित्रांकन : दिलीप कदम, तुषार लष्करे.

अमावस की काली रात में फॉरेस्ट ऑफिसर जयसिंह जंगल में अकेला गश्त लगा रहा था।

अचानक एक दर्दनाक चीख से गूंज उठा जंगल।

वह आवाज की दिशा में दौड़ पड़ा।

और जब वह एक खुले स्थान पर पहुंचा—

...मगर इससे पहले कि वह फायर कर पाता-
उफ!
जयसिंह आश्चर्य और भय के कारण जड़वत् खड़ा रह गया।
म... मुझे माफ कर दो।
गुर्र... गुर्र... मैं तुझे माफ नहीं करूंगी! हर अमावस की रात तुझे इसी तरह कष्ट झेलना होगा!
फिर अचानक जयसिंह को जैसे होश आया।
धांय
उफ! बच गई!
अगले पल बिल्ली पास की झाड़ियों में जा घुसी।
जयसिंह उस व्यक्ति के पास पहुंचा।
कौन हो तुम?
आह!

उस व्यक्ति ने चेहरे से हाथ हटाए।
उफ!

जयसिंह डरकर पीछे हट गया।
डरो नहीं भाई। मैं भी तुम्हारी ही तरह इंसान हूं।

मगर वह बिल्ली...
बिल्ली नहीं, चुड़ैल कहो। वह मेरी दुश्मन है।

उस चुड़ैल की तुमसे क्या दुश्मनी है... और तुम कौन हो?
अगर तुम मेरी मदद करने का वादा करो तो मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाऊं।

अगर तुम्हें वाकई मदद की जरूरत है तो जरूर करूंगा।
धन्यवाद! मुझे विश्वास है कि तुम मुझे अवश्य मुक्ति दिला सकते हो।
मेरा नाम विजय है। एक वर्ष पहले तक मैं एक बलशाली पहलवान था।

विजय, आओ, एक पकड़ हो जाए।
हो जाए!

...और...

...कुश्ती अधिक देर नहीं चली...
धाड़
उफ!
चित!

विजय मेरा सबसे प्रतिभाशाली और बलशाली चेला है।
धन्यवाद गुरु जी!

विजय! अगले हफ्ते तुम्हारी इनामी कुश्ती है। अतः आज से तुम देर तक अखाड़े में व्यायाम करोगे।
जी गुरु जी!
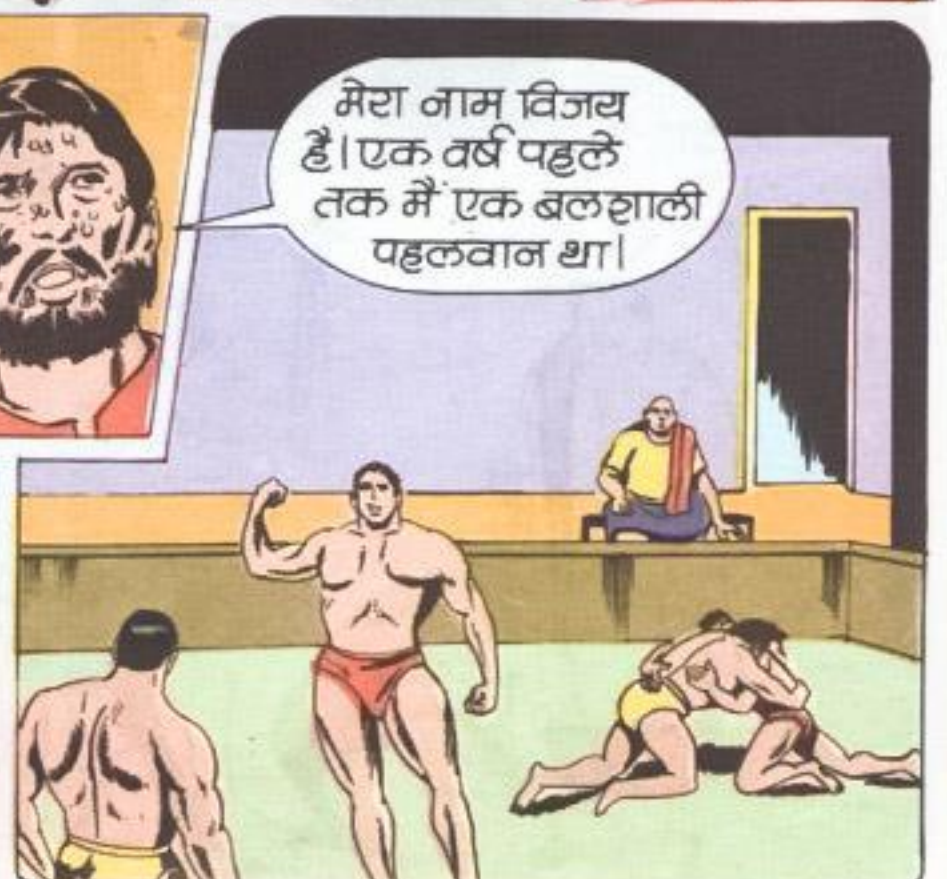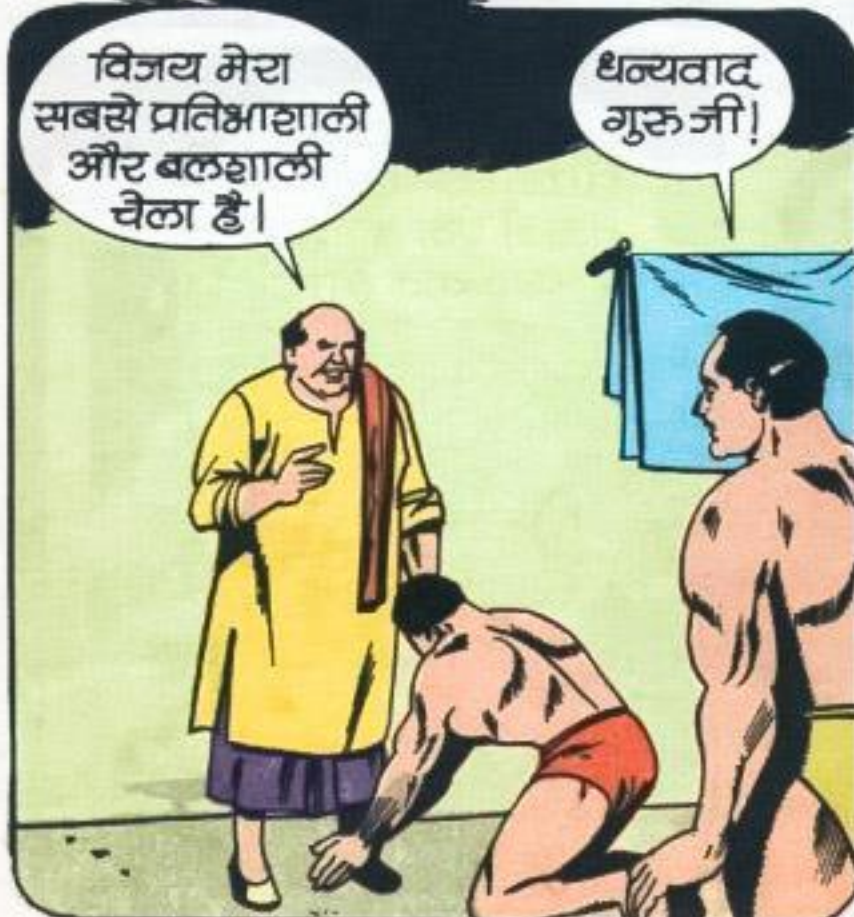
...उस दिन रात ग्यारह बजे तक गुरु जी ने मुझसे कड़ा व्यायाम कराया...
शाबाश!
हई शा...!

...आधी रात के समय मुझे घर जाने की अनुमति मिली...
उफ! आज अमावस की रात है। कितना अंधेरा है!

...कुछ दूर जाने पर सुनसान सड़क के किनारे एक व्यक्ति को बैठा देख मैं चौंका...
अरे!

कौन हो भाई? रात के समय यहां क्यों बैठे हो?
मैं बहुत थक गया हूं। यह बोझ उठाकर चला नहीं जाता।

तो तुम्हारा बोझ मैं उठा लेता हूं। कहां जाओगे तुम?
कब्रिस्तान!

क्या? कब्रिस्तान... इस समय?
तुम तो डर गए पहलवान। अगर मदद नहीं करना चाहते तो अपने रास्ते जा सकते हो।

...डरना तो मैंने सीखा ही नहीं था, इसलिए उसका टोकरा उठा लिया...
चलो, जहां कहो पहुंचा देता हूं।
तुम सचमुच बहादुर हो।

काफी भारी है। पता नहीं क्या है टोकरे में?

...कुछ ही देर में हम कब्रिस्तान पहुंच गए...
डर तो नहीं लग रहा?
बिल्कुल नहीं। लेकिन तुम्हें यहां क्या काम है?

उस कब्र में मेरा एक मित्र दफन है, मैं उसके लिए दुआ करने आया हूं।
अजीब आदमी है! यह कोई दुआ करने का समय है?

बस, यहीं रख दो और बैठकर जरा सांस लेलो।

...मैं काफी थका हुआ था इसलिए बैठ गया...
क्या तुम रात भर यहीं रुकोगे?
नहीं! अगर तुम कुछ देर रुको तो हम साथ ही वापस चलेंगे।

...फिर वह उस कब्र की ओर बढ़ गया...
हूऽऽऽ
चींऽऽ
उल्लू और नेवले वगैरह बोल रहे हैं!

उसने अपने लिबास में से एक थैली निकाली, जिसमें कोई पाउडर या राख भरी थी। फिर वह अजीब हरकत करने लगा।
क्या कर रहा है यह?

...राख छिड़कते हुए फिर वह कब्र के चारों ओर घूमने लगा...
उठ! आज तुझे नींद से जागना ही होगा।
क्या यह पागल है?

...अचानक एक भयानक गर्जना हुई...
घर्र...घर्र...
ओह! यह क्या हो रहा है?

...और फिर मैंने एक भयानक दृश्य देखा...
हे भगवान!
गड़...गड़...गड़

बाहर निकल! मैं तुझे लेने आया हूं।
शूंऽऽऽ

...अगले ही पल...
ई...ई...ई...

...इस दृश्य को देखकर मैं अपने स्थान पर जड़वत बैठा रह गया...
आई...ई...ई... बचाओSSS
बाहर आ... बाहर आ...!

छोड़ दे मुझे! मैं तेरे साथ नहीं जा सकती!
मगर मैं तुझे लेने आया हूं!

मैं नहीं जाऊंगी! बचाओSSS बचाओSSS
कौन बचाएगा तुझे?

...तभी...
गुर्र...गुर्र...
गुर्र...गुर्र...

...वह व्यक्ति कुत्तों को देखकर घबरा गया...
उफ!
गुर्र...र्र...र्र
गुर्र...र्र...र्र...

...अचानक वह लाश ठहाके लगाने लगी...
हा...हा...हा...! मेरे मददगार आ गए हैं। अब तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

...वह व्यक्ति फौरन मेरी ओर देखकर चिल्लाया...
पहलवान! वह टोकरा खोल दो जल्दी!
!!!

...लेकिन मैं कुछ करता उससे पहले ही...
गुर्र...गुर्र...
आह!

...अगले पल सारे कुत्ते उस पर टूट पड़े...
गुर्र...गुर्र...
गुर्र...गुर्र...

हा...हा...हा...
ई...ई...ई...

...पल भर में ही कुत्तों ने उसकी तिक्का-बोटी कर डाली...

उसे भी मज़ा चखाओ!
उफ़!

...वे भयानक कुत्ते फौरन मेरी ओर लपके...
हे भगवान्!
गुर्र... गुर्र...
गुर्र... गुर्र...

...अपनी जान खतरे में देख अचानक मुझे उस टोकरे का विचार आया...
उसने टोकरा खोलने को कहा था!

...टोकरे में मांस के टुकड़े भरे हुए थे...
ओह! यह तो मांस के टुकड़े हैं!

...और मैंने वह मांस कुत्तों पर उछाल दिया...
यह लो!

...कुत्ते मांस के टुकड़ों पर टूट पड़े...
चपर...चपर...
चपर...चपर...
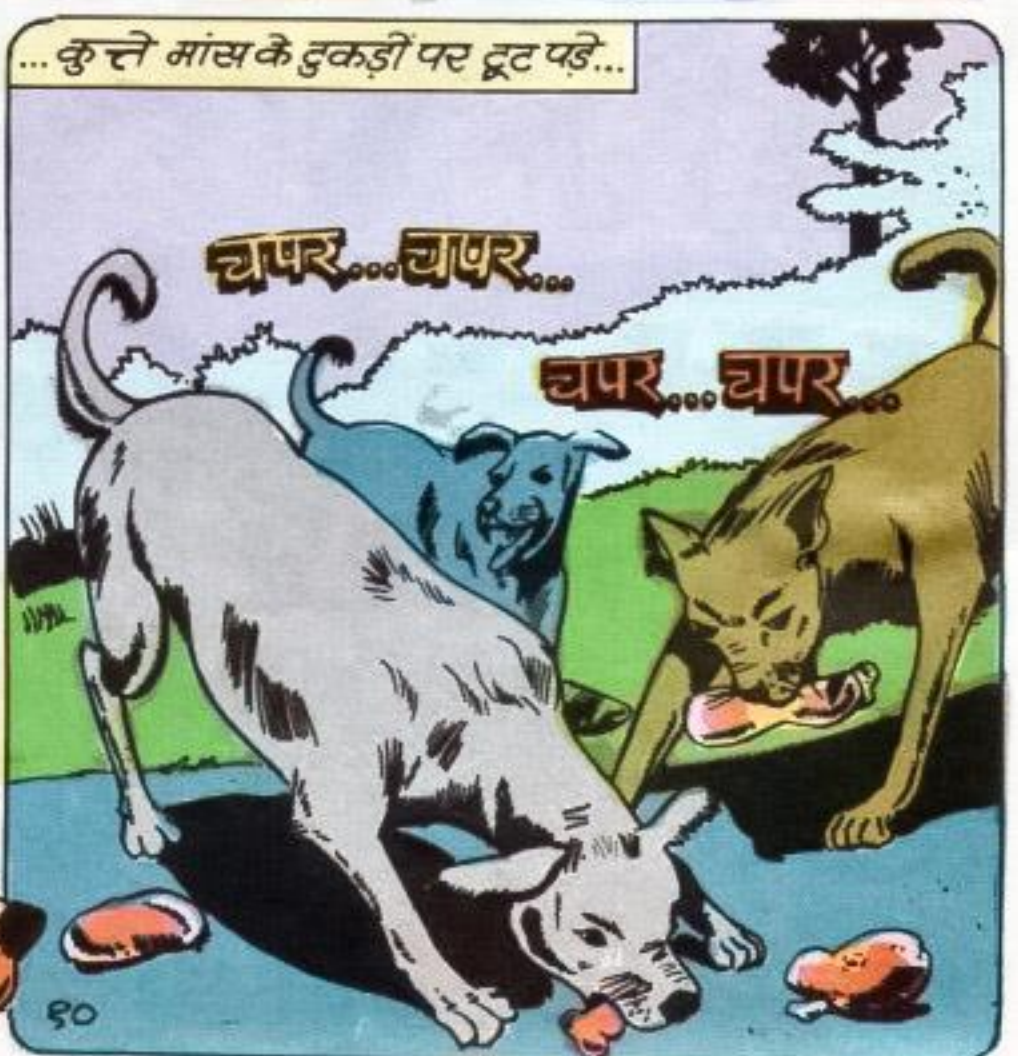
... अच्छा मौका देख मैं भाग खड़ा हुआ ...
हुफ्फ...
हुफ्फ...!
मैं तुझे छोड़ूंगी नहीं।

... और फिर मैं कब्रिस्तान से बाहर नहीं जा सका...
आई... ई... ई...
हा...हा...हा...

तू उस तांत्रिक के साथ मुझे जगाने आया था ना ? उसे तो मेरी साथी आत्माओं ने मार डाला। अब तेरी बारी है।
नहीं...! मैं निर्दोष हूं।

मुर्दों को सताने वाले निर्दोष नहीं होते। मैं तुझसे भयानक प्रतिशोध लूंगी। हा...हा...हा...!
छ..छोड़ दो मुझे!

... फिर अचानक उसने काली बिल्ली का रूप धारण कर लिया...
गुर्र...
गुर्र...
उफ्फ!

... और मेरी गर्दन में दांत गड़ा दिये...
गुर्र...गुर्र...
आई...
ई...ई...

...मैंने पूरी शक्ति लगाकर उसे दूर झटक दिया...
गुर्र...गुर्र...

...और दोबारा भाग खड़ा हुआ...
आह!

...इस बार मैं अपने कमरे में पहुंचकर ही रुका था...
धड़
आह!
...बिस्तर पर गिरकर मैं भय के कारण बेहोश हो गया था...

...और जब मुझे होश आया...
उफ! यह क्या?

...खुद को आइने में देख मेरे होश उड़ गए...
यह मुझे क्या हो गया? यह कैसी बीमारी है?

तभी आइने में उस चुड़ैल की छवि उभरी...
यह बीमारी नहीं, मेरा प्रतिशोध है! हा...हा...हा...!
त... तुम...!

...मैंने मुड़कर देखा, मगर कमरे में कोई नहीं था। वह सिर्फ आइने में नजर आ रही थी...
मैं तुझे चेतावनी देने आई हूं। अब हर अमावस की रात में तुझे काटा करूंगी, जिससे तेरी यह बीमारी बढ़ती चली जाएगी और धीरे-धीरे तेरा यह शरीर गल-सड़ जाएगा। हा...हा...हा...!

...फिर वह गायब हो गई...
हा...हा...हा...! हा...हा...हा...!

...सुबह होते ही मैं अखाड़े पहुंचा...
ऐ, कौन हो तुम?

मैं विजय हूं प्रेमसिंह!
विजय?
विजय?
क्या हुआ तुम्हें?
रात को तो ठीक थे तुम!
...तभी गुरु जी वहां पहुंच गए...
गुरु जी... मैं बर्बाद हो गया...! सुबक...सुबक...
लेकिन यह सब हुआ कैसे?

...सबने मेरी कहानी ध्यानपूर्वक सुनी...
ओह! तो तुम प्रेतात्मा का शिकार हुए हो!
हां गुरुजी! उसने मुझे चेतावनी दी है कि हर अमावस की रात को वह मुझे काटने आएगी!

चिंता मत करो! हम तुम्हारी सहायता करेंगे! आने वाली अमावस को हम तुम्हारे साथ ही रहेंगे!
धन्यवाद गुरुजी!

...और जब अगली अमावस की रात आई...
विजय! यह बहुत पहुंचे हुए तांत्रिक हैं! तुम्हारे साथ इसी कमरे में रहेंगे! जबकि मैं अपने चेलों के साथ बाहर पहरा दूंगा!

...तांत्रिक ने मेरे बिस्तर के गिर्द भभूत से घेरा बनाया...
वह इस घेरे को पार नहीं कर सकेगी!

...फिर निकट ही आसन जमाकर बैठ गया वह...
तुम बाहर जाओ पहलवान जी!
अच्छा महाराज!

...गुरु जी बाहर अपने चेलों के पास पहुंच गये...
सब होशियार रहना! चुड़ैल से डरना मत, बल्कि उसका मुकाबला करना!

...उधर कमरे में...
शूं...

...अगले पल आइने में से धुएं की एक लकीर निकली! और फिर...
शूं...

...परिणाम स्वरूप चुड़ैल खोपड़ी में प्रवेश कर चुकी थी...
हा...हा...हा...
अरे!
क... कौन है?

...अगले पल...
शूं...
...मैं असहाय-सा पड़ा तमाशा देख रहा था...

मैं आ गई हूं तांत्रिक!
वापस चली जा, वरना पछताएगी!

हा...हा...हा...! तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता! तेरे पास वह शक्ति ही नहीं है!
दुष्ट आत्मा! मेरी शक्ति को ललकारती है!
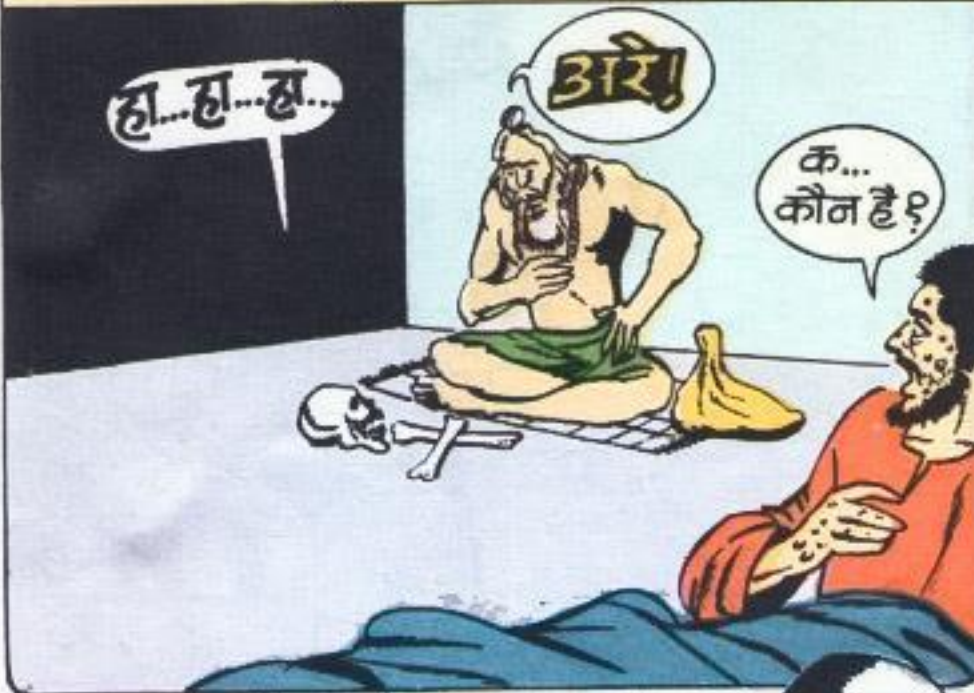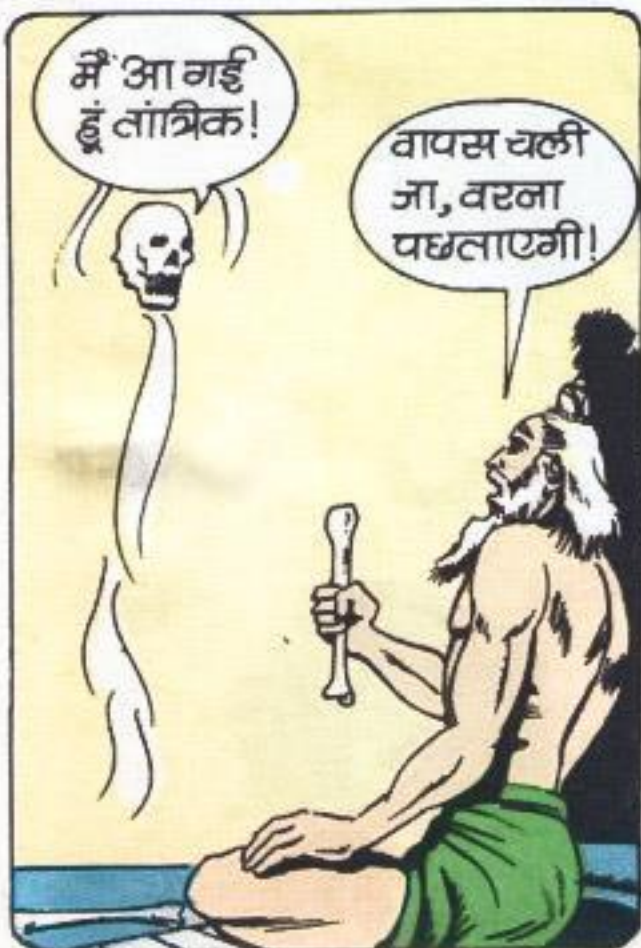
जा!
मेरी बात मान ले तांत्रिक! तू मेरा मुकाबला नहीं कर सकता!
मैं तुझे भस्म कर सकता हूं!
तो फिर मर!
आऽऽऽ
...अगले ही पल खोपड़ी ने तांत्रिक के गले में दांत गड़ा दिये...
ई...ई...ई...
...तांत्रिक बुरी तरह छटपटा उठा...
आऽऽऽ
आऽऽऽ
गुर्र...गुर्र...

...फिर वह नीचे गिरा और शांत हो गया...
धाड़
...अगले पल वहां धुआं-सा उठा...
शूं...
...और चुड़ैल सामने आ गई...
हा...हा...हा...
बचाओ...
धड़ाम
कौन है?
...और जवाब उसे इस प्रकार मिला...
ही...ही...ही...
उफ!
...चुड़ैल के नुकीले पंजे पहलवान के शरीर में धंसते जा रहे थे...
आई...ई...ई...

...फिर...

फचाक

...शोर सुनकर गुरु जी शेष चेलों साथ भीतर आए...

हे भगवान!

ही...ही...ही...

आओ-आओ, मैं सबको खा जाऊंगी!

गुरु जी!

डरो मत। अब मिलकर पकड़ लो इसे!

हा...हा...हा...

आओ, पकड़ो मुझे!

ही...ही...ही...

...उसकी गर्दन शरीर से अलग हो गई...

...दूसरे पहलवान का उसने पेट फाड़ डाला...
आई... ई... ई...
फचाक
हा...हा...हा...
हे भगवान!
...फिर वे सब मुझे अकेला छोड़कर भाग खड़े हुए...
भागो!
हा...हा...हा...
...और अचानक मुझे भी भागने का विचार आया...
गुर्र... गुर्र...
...मैं खिड़की से कूद कर भागा...
...और खेतों में जा घुसा...

...तभी...
घुर्र...घुर्र...
उफ!
...वह मनहूस बिल्ली मेरी टांग से लिपट गई...
आई...ई...ई...
गुर्र...गुर्र
...उसके काटने से जो पीड़ा हुई उसके कारण मैं बेहोश होकर गिर गया...
...और जब सुबह होश आया तो मेरी बीमारी बहुत बढ़ चुकी थी...
आह! हे भगवान्, मेरा शरीर सड़ रहा है!
...तभी गांव के कुछ बच्चे वहां पहुंच गए। उन्होंने मुझे पहचाना नहीं...
अरे! वह देखो!
पागल है!
गंदा पागल!
...मुझे वहां से भागना पड़ा...
मारो!
टक टक
उफ!
ठक
ताड़
ठक
यह मुझे मार डालेंगे!

...गांव छोड़कर मैं जंगल में निकल आया। मैं फिर दूसरे गांवों में भटकता रहा, लेकिन हर जगह मुझे लोगों की घृणा का सामना करना पड़ा...
अरे! यह तो कोढ़ी है।
भगाओ इसे!

...लोगों की घृणा से बचने के लिए मैं जंगल में छुपकर रहने लगा...
अब तो यही घास-फूस खाकर पेट भरना होगा!

...फिर एक दिन एक साधु महाराज वहां से गुजरे...
कौन हो तुम?
मैं एक अभागा इंसान हूं महाराज!
...और मैंने उन्हें अपनी पूरी कहानी सुनाई...

मैं तेरी विपदा समझ गया हूं बच्चे! वह प्रेतात्मा तुझसे प्रतिशोध ले रही है। तुझे उसके प्रकोप से सिर्फ झारिया बाबा ही बचा सकते हैं। वह बहुत बड़े तांत्रिक हैं!
कहां मिलेंगे वह?

अनंतपुर के जंगल में उनका डेरा है। तू उनकी शरण में चला जा!
धन्यवाद महाराज! मैं आज ही अनंतपुर चला जाऊंगा!

...अनंतपुर जाने के लिए मैं जंगल से गुजर रहा था कि...
हा...हा...हा...
हऽऽऽ!

मैं जानती हूं, तू झारिया बाबा के पास जा रहा है। मगर मैं तुझे वहां पहुंचने नहीं दूंगी!

भगवान के लिए मुझे क्षमा कर दो! मुझसे अनजाने में गलती हो गई थी। उसकी तुम पहले ही काफी सजा दे चुकी हो मुझे!
नहीं! मैं तुझे जीवनभर कष्ट दूंगी!

इस समय तो मैं जा रही हूं, लेकिन तू झारिया बाबा के पास कभी नहीं पहुंच सकेगा। हा... हा... हा...
हे भगवान!

...मैं निराश हो गया था, फिर भी अनंतपुर की ओर बढ़ता रहा...
झारिया बाबा तक पहुंचने का अपना प्रयास मैं जारी रखूंगा!

...आखिरकार मैं अनंतपुर के जंगल में पहुंच गया...
यह खतरनाक जंगल है। जानवर भी होंगे यहां!

...एक पेड़ों के झुण्ड के निकट मैं सांस लेने के लिए रुका...
झारिया बाबा! मैं तेरी शरण में आ रहा हूं। मेरी सहायता करना!

...अचानक पेड़ों के पीछे प्रकाश चमका...
ओह! यह क्या है?

...फिर मैं भय से उछल पड़ा...
हा...हा...हा..,

...वह मेरी ओर बढ़ा आ रहा था...
हा...हा...हा... हो...हो...हो...
क...कौन हो तुम?

मैं उस आत्मा का सेवक हूं, जिसका तू दोषी है। तेरा रास्ता रोकने आया हूं मैं...

...कहकर उसने खोपड़ी वाला डण्डा धरती में गाड़ दिया...
ठाक
अगर तूने इस स्थान से आगे बढ़ने की कोशिश की तो मैं फरसे से तेरी टांगें काट डालूंगा!

...फिर अचानक वह चौंका और कुत्ते की तरह हवा में कुछ सूंघने लगा...
कुछ गड़बड़ है!
...तभी उसके गले में लटकी खोपड़ी जैसे जीवित हो उठी...
चीं SSS चीं SSS
ऊं... ऊं...
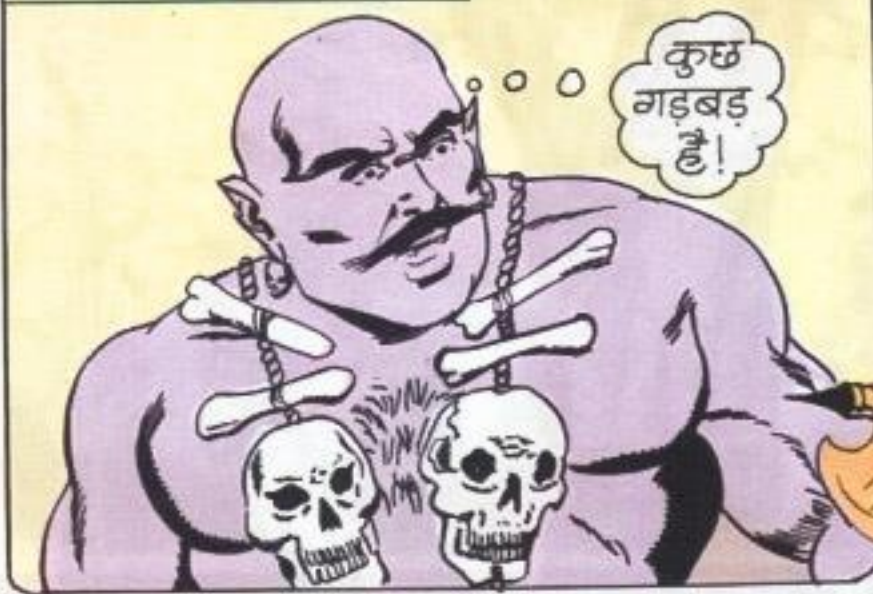
क्या कहना चाहती हो तुम?
खतरा!

हम तांत्रिक झारिया बाबा को देख रहे हैं! वह इसी ओर आ रहा है!
आने दो! मैं उसका मुकाबला करूंगा!

...पहली बार मेरे मन में खुशी की लहर उठी...
झारिया बाबा आ रहे हैं! वह अवश्य ही मेरी मदद करेंगे!
मैं उसे काट डालूंगा!
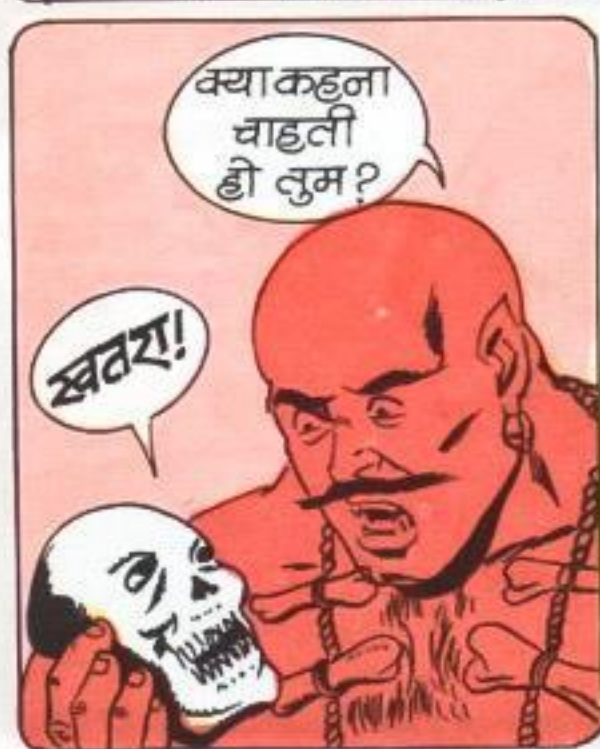
...तभी दूर मैदान में एक छाया-सी उभरी...

...और जब दृश्य स्पष्ट हुआ...
झारिया!
फुंऽऽऽ
...मैं आश्चर्य से उन्हें निकट आते देख रहा था...
...हमारे निकट पहुंचकर झारिया बाबा ने भैंसे को रोका, फिर मेरी ओर देखा...
फुंऽऽऽ
तूने हमें याद किया, इसलिए हम तेरी सहायता को चले आए!
...लेकिन मैं कुछ कहता इससे पहले...
सईऽऽऽ
...आश्चर्य जनक ढंग से फरसा वापस घूमकर उसके हाथ में आ गया...
हा...हा...हा...!
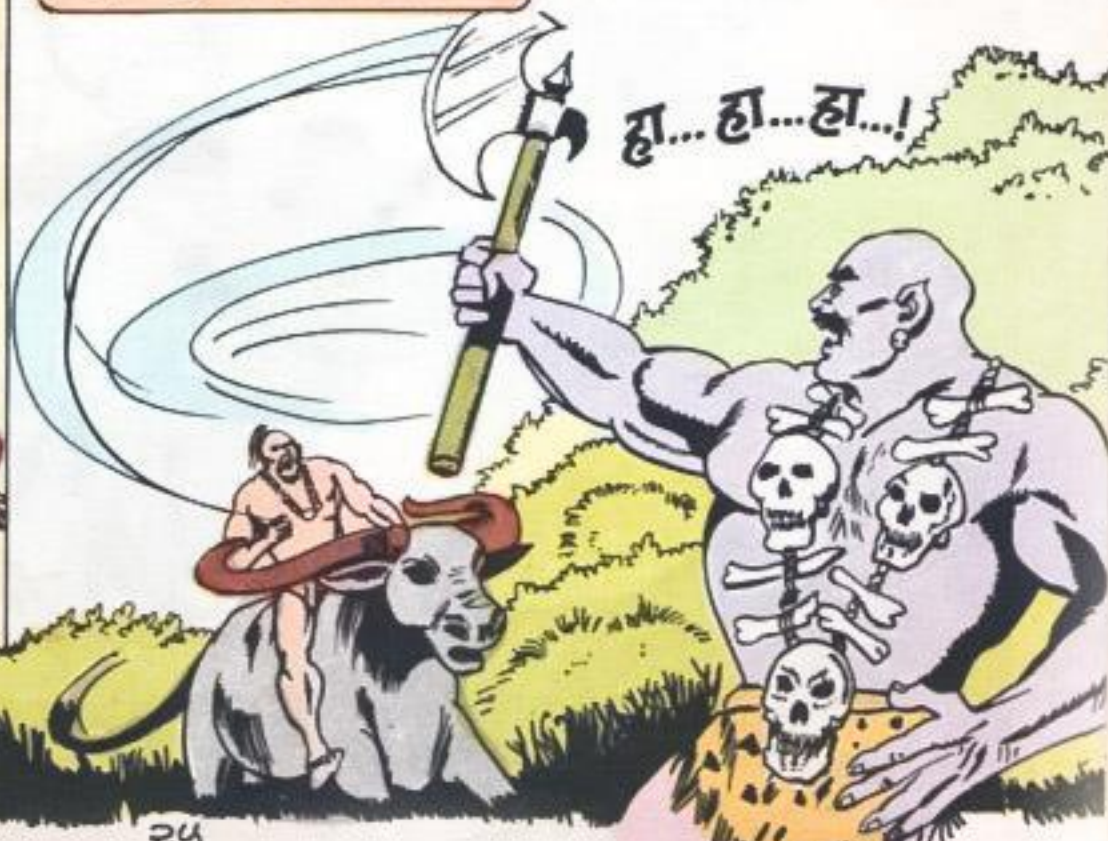
चला जा यहां से! मेरे क्षेत्र में गंदी आत्माओं को आने की अनुमति नहीं है!
फूंऽऽऽ
मैं तुझसे नहीं डरता तांत्रिक! इस आदमी तक पहुंचने के लिए तुझे मुझसे मुकाबला करना होगा!
नष्ट हो जाएगा तू, पापी!
उससे पहले मैं ही तुझे नष्ट कर दूंगा तांत्रिक!
फूंऽऽऽ
तो ठीक है!
...कहकर झारिया बाबा ने मंत्र पढ़ा और अगले ही पल...
सड़ाक
सड़ाक
सड़ाक
सड़ाक
अब भी समय है। चला जा यहां से!

नहीं जाऊंगा!
तो फिर चख मजा!
फुऽऽऽ
उफ!
...भैंसे ने रौंद डाला था उसे...
आई...ई...ई...!
फेंऽऽऽ
...कालिया एक बार उठा। तभी झारिया बाबा भैंसे को मोड़कर उसके निकट जा पहुंचे। और...
खचाक
...अगले ही पल...

... अब वहां सिर्फ मैं और झारिया बाबा थे...
तेरा शत्रु नष्ट हो चुका है!
धन्यवाद बाबा! मगर वह चुड़ैल!

हम जानते हैं! सब पता है हमें उस चुड़ैल का प्रबंध भी हम ही करेंगे!
...कहकर उन्होंने भैंसे के गले से रस्सी निकाली...

ले इसे संभाल! अगली बार जब चुड़ैल तेरे निकट आए तो यह फंदा उसके गले में डाल देना!

मगर बाबा...!
सवाल मत पूछ! तेरा काम हो चुका है! अब चला जा यहां से!
...उनके स्वर में छुपा आदेश सुनकर मैं वहां एक पल भी नहीं ठहरा था...

...यह कहानी सुनाने के बाद विजय ने अपने कपड़ों के भीतर से रस्सी निकालकर दिखाई!
यह वही रस्सी है! कमजोरी की वजह से मैं यह फंदा उस चुड़ैल के गले में नहीं डाल सका!
पर अब तो वह चुड़ैल भाग चुकी है!
लेकिन वह वापस आएगी! अभी वह मुझे काट नहीं सकी है! वह जरूर वापस आएगी! तुम मेरी मदद करो!

बोलो, क्या करना होगा मुझे ?
मेरे निकट कहीं छुपकर बैठ जाओ। और जब वह आए तो यह फंदा उसके गले में डाल देना!

जयसिंह ने उसे सहारा देकर एक पेड़ के सहारे बैठा दिया और स्वयं उसी पेड़ की ओट में छुपकर बैठ गया।
घबराना मत मित्र! मुझे फंदा फेंकना आता है। वह बच नहीं सकेगी!
भगवान करे ऐसा ही हो!

कुछ घण्टे बाद-
गुर्र... गुर्र...
ओह!

वह धीरे-धीरे विजय की ओर बढ़ रही थी।
पता नहीं, जयसिंह जाग रहा है या सो गया!

जबकि जयसिंह तैयार था।
साँय
गुर्र... गुर्र...

फंदा बिल्ली के गले में जाकर गिरा।
गुर्र... गुर्र...

अगले ही पल उसके शरीर में आग लग गई।
भक्क
घुर्र...घुर्र...

और पलभर में ही वहां सिर्फ राख का ढेर पड़ा था।
याऽऽ हूऽऽ
विजय खुशी से चिल्ला उठा।

और फिर एक और आश्चर्यजनक घटना घटी।
अरे!
विजय के शरीर के फोड़े तेजी से गायब हो रहे थे।

धीरे-धीरे उसका शरीर अपनी असली हालत में आ गया था।
मैं ठीक हो गया हूं जयसिंह! चुड़ैल के साथ-साथ मेरी बीमारी भी समाप्त हो गई!

मुझे खुशी है, तुम्हें कष्ट से मुक्ति मिल गई, विजय!
धन्यवाद मित्र! झारिया बाबा के साथ-साथ मैं तुम्हारा भी आभारी हूं!
समाप्त

नन्ही सी... प्यारी सी...
मासूम गुड़िया सी लड़की
जो राम-रहीम के दिमाग पर
छिपकली की भांति छा गयी।

"वंडर गर्ल"